डॉ० सोमवीर
सहायक प्रोफेसर हिंदी
राजकीय महाविद्यालय अटेली (महेंद्रगढ़)

हरिशंकर आदेशः काव्य एवं सौन्दर्य

भूमिका

वर्तमान काल में हिन्दी साहित्य की रचना न केवल भारतवर्ष में ही हो रही है अपितु, विभिन्न देशों में भी हो रही है जिसमें मारीशस, सूरीनाम, गुयाना, ट्रिनीडाड, कनाडा, अमेरिका, चीन, फिजी, लंका आदि देशों में प्रवासी भारतीयों द्वारा हिन्दी को पर्याप्त सम्मान दिया जा रहा है जो अपनी रचनाओं से साहित्य भंडार की वृद्धि कर रहे । विदेशी साहित्यकार भी हिन्दी साहित्य में लगे हुए हैं । ऐसे साहित्यकारों में सात सप्तशतियों की रचना करने वाले ट्रिनीडाड निवासी प्रवासी महाकवि प्रो. हरिशंकर आदेश का विशेष स्थान है जिन्होंने सपृशतियों के अतिरिक्त कविता खंड काव्य महाकाव्य संगीत, आयुर्वेद, कहानी संग्रह नाटक एवं बाल काव्य संग्रह आदि बहुमुखी सृजन कार्य किया है । इनका प्रचुर साहित्य हिन्दी साहित्य हेतु धरोहर रूप में है । आदेश मूलतः कवि है । इनकी सहज काव्य धारा में भारतीय आत्मा मुखरित हुई है । काव्य एवं सौन्दर्य का चोली दामन का अन्योन्याश्रय संबंध है।

''रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम'' अर्थात रमणीय या सुंदर अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य है । सौन्दर्य विहीन काव्य काव्य नहीं है । विश्व का सौन्दर्य, बाल्मीकि, कालिदास, कबीरदास, तुलसीदास एवं जय शंकर प्रसाद के काव्यों में दृष्टिगोचर होता है । प्रकृति सौन्दर्य मानव सौन्दर्य, दिव्य सौन्दर्य एवं भाषा सौन्दर्य आदि काव्य में ही विद्यमान होता है ।

सौन्दर्य प्रेमी कवि विश्वांगन में बिखरे सौन्दर्य के विविध रूपों को काव्य में प्रस्तुत कर उसे मुस्कराता मधुबन बना देता है । काव्य में कठीं लहलहारी कृषि दृष्टिगोचर होती है, कहीं पर कल–कल का संगीत करती सरिता अपने प्रेमी सागर से मिलने जाती दिखलाई पड़ती है, कहीं झर–झर करते झरने उद्दाम गति से गीत गाते दिखलाई सुनाई पड़ते हैं । खग का कलरव, कलियों का चटकना, सूर्य का उदय होना, बादलों का झड़ी लगाना, बादल फटना आदि सौन्दर्य का रूप काव्य में देखा जा सकता है । सौन्दर्य की यह शोभा विविधता में काव्य में उभर कर उसे प्राणवान बना देती है

।

सृष्टि में कण–कण में सौन्दर्य व्याप्त है । रागात्मक लगाव संसार को परस्पर आपस में बांधे हुए है । प्रेम एवं सौन्दर्य मानव के स्वभाविक आकर्षण के आधार हैं । सहजाकर्षण ही सौन्दर्य है। मानव जन्मजात सौन्दर्य प्रेमी है । सौन्दर्य दर्शन में प्रेम के उद्भव की संभावना होती है । मानव का बाह्य सौन्दर्य बाह्य चक्षु से देखा जा सकता है, अतः सौन्दर्य भाव मात्र अंत चक्षुओं से देखा या अनुभव किया जा सकता है । सौन्दर्य का वास्तविक स्वरुप बाह्य एवं अंतः सौन्दर्य के सामंजस्य में दृष्टिगोचर होता है । शारीरिक सौन्दर्य के साथ–साथ मानसिक सौन्दर्य की समान्वित ही मानव को आदर्श सौन्दर्य प्रदान करती है । यह आदर्श सौन्दर्य काव्य में विद्यमान होता है । सौन्दर्य मानसिक आनंद एवं संतुष्टि काव्य के माध्य से ही प्रदान करता है ।

कवि सौंदर्योपासक सहृदय प्राणी है । सौन्दर्य काव्य सृष्टि का परम आधार है । सौन्दर्य के अभाव में काव्य सृजन संदिग्ध ही नहीं असंभव है । कवि सर्वाधिक रूप में सौन्दर्य से अभिभूत एवं प्रभावित होता है । यह कहना अत्युक्ति न होगी कि सौन्दर्य ही काव्य का सर्वाधिक प्रभावी आधार है । सौन्दर्य के अभिमुख मानव तर्क–कुतर्क, पुण्य–पाप, संगतासंगत, धर्माधर्म एवं उत्कर्षापकर्ष आदि के चिंतन भाव से मुक्त होकर सौन्दर्य–तरंगों में तरंगायित होकर विशेष आनंदानुभूति करता है । कवि अपने काव्य को दिव्य एवं मोहक रूप प्रदान करने हेतु समक्ष विद्यमान सुंदर रूप को स्व लेखनी से चित्रित करने के लिए आकुल–व्याकुल रहता है । यह सौन्दर्यांकन की आतुरता ही उसकी सौन्दर्य–प्रियता एवं उसके काव्य की श्रेष्ठता का सबल आधार प्रमाणित होती है ।

सौन्दर्य–प्रेमी कवि सांसारिक जीवन में बिखरी हुई सुंदरता को विविध रूप प्रदान करता है ।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि काव्य एवं सौन्दर्य का अन्योन्याश्रय अभूतपूर्व संबंध है । सौन्दर्य काव्य की आत्मा है । सौन्दर्य विहीन काव्य प्राण हीन शव समान है ।

2. सप्तशतियों में चित्रित सौन्दर्य के विविध प्रकार

कहा गया है –

''पानी रे पानी तेरा रंग कैसा,
जिसमें मिला दो मेरा रंग वैसा ।।''

अर्थात् पानी का कोई रंग, रूप, आकार, स्वाद या गुण नहीं होता है जिसमें मिला दिया जाता है वही रंग, रूप, आकार, स्वाद या गुण धारण कर लेता है । इसी प्रकार सौन्दर्य भी अपने आधारानुसार स्वारय ग्रहण करता है । विश्व में अनगिनत

आधार है जिनके अनुसार सौन्दर्य विविध प्रकार काव्य में चित्रित किया गया है। हरिशंकर आदेश की सप्तशतियों में सौन्दर्य के अनेक प्रकार हैं। यहां प्राकृतिक देशाधारित, भारतीय विदेश जड़ एवं चेतनाधारित का ही विवेचन करना श्रेयष्कर समझा है ।

प्राकृतिक

प्रकृति का मानव से अन्योन्याश्रित संबंध है । वैज्ञानिक चिंतन से स्पष्ट होता है कि पेड़–पौधे मानव जीवन के प्रमुख आधार हैं । मानव जीवन इन्हीं पेड़–पैधों द्वारा दी गई वायु को अपने जीवन में प्राण वायु के रूप में ग्रहण करता है । इस प्रकार मनुष्य की जीवन लीला का क्रम प्रकृति पर निर्भर है । यह प्रकृति की उपयोगिता है।

मनुष्य की भाव व्यंजना प्रकृति की गोद से आरंभ होकर उसके मनोभावों को पुष्ट कर देती है इसका माध्यम प्रकृति ही है । इस प्रकार प्रकृति के दोनों ही रूप मनुष्य को सुंदरता प्रदान के विशेष आधार सिद्ध होते हैं । प्रकृति का बाह्य रूप मनुष्य के अंतःकरण को पवित्र करने की भूमिका में होता हे । यह सच है कि पल्लवित पुष्प की मुस्कान मनुष्य को नवीन जीवन की प्रेरणा प्रदान करती है, बहती सरिता का जल मनुष्य को गतिशील बनाता है, चहकते पक्षीगण मनुष्य को हमेशा हंसते रहने की शक्ति प्रदान करते हैं । इस संदर्भ में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रकृति के सौन्दर्य विवेचन में अपना प्रेरक विचार प्रस्तुत किया है :–

''यदि अपने भावों को समेट कर मनुष्य अपने हृदय को शेष सृष्टि से किनारे कर ले या स्वार्थ की पशुवृत्ति में ही लिप्त रखे तो उसकी मनुष्यता कहां रहेगी? यदि वह लहलहाते खेतों, और जंगलों, हरी घास के बीच घूम–घूम कर बहते हुए नालों, काली चट्टानों पर चांदी की तरह ढलते हुए झरनों मंजरियों से लदी हुई अमराइयों और तट पर खड़ी झाड़ियों को देख क्षण भर न लीन हुआ यदि खिले हुए फूलों को देख वह न खिला, यदि सुंदर रूप सामने पाकर अपनी भीतरी कुरूपता का उसने विसर्जन न किया तो उसके जीवन में रह क्या गया ?''[1]

यह सर्वव्यापक तथ्य हे कि विधाता की सृष्टि से प्रतिपल परिवर्तन करके सजने वालों में प्रकृति सुंदरी का स्थान प्रथम है । इसका सौन्दर्य सब का मन मोहने वाला होता है । इस प्रकार प्रकृति और मनुष्य का अभिन्न संबंध है ।

प्रो0 हरिशंकर 'आदेश' के काव्य में भारतवर्ष की प्रकृति का ही नहीं अपितु कनाडा, अमेरिका और ट्रिनीडाड आदि प्रकृति का बहुविध चित्रांकन है । प्रकृति के

[1] रामचंद्र शुक्ल चितांमणि, प्रथम भाग, पृ० 217

अनन्य उपासक प्रो० आदेश को प्रकृति के आंगन के अनुपम शांति प्राप्त होती है । यह शांति ही उन्हें सौन्दर्य दृष्टि प्रदान करती रही है और वह सौन्दर्य उनके काव्य में जीवन्त रूप में उभरता रहा है । प्रकृति के विविध रूप कवि के विविध भावों का आधार बनकर सामने आए हैं ।

मानव प्रकृति ही ऐसी है कि वह प्राकृतिक सौन्दर्य का रसपान किए बिना अपनी स्वभाविक तृष्णा नहीं बुझा सकता । प्रकृति की छाया में ही मानव हृदय की भावनाएं पल्लवित होने लगती हैं । इसीलिए मानव जीवन का अभिन्न अंग बनकर प्राकृतिक सौन्दर्य हमारे सामने मुस्कराता रहता है ।

प्राकृतिक सौन्दर्य को जड़ और चेतन दो रूपों में विभक्त कर सकते हैं । इन्हीं दो रूपों में प्राकृतिक सौन्दर्य सृष्टि में आकर्षण का केन्द्र बना रहता है । साहित्यकार सृष्टि के प्रत्येक अंग के सौन्दर्य का रसपान कर आनंदित होना चाहता है । उसके काव्य में समग्रता से सौन्दर्य को अभिव्यक्ति मिलती है । इसीलिए काव्य सौन्दर्य विश्लेषण हेतु जड़ और चेतन दो वर्ग बनाए गए हैं ।

प्राकृतिक सौन्दर्य

प्रकृति का मानव संबंध अभिन्न है । प्रकृति की क्रोड़ में पलकर मनुष्य मानव रूप में अवतरित हुआ है । प्रकृति मानव की सहचरी है । प्रकृति का बाह्य रूप हमारे अंतःकरण को सुंदर बनाने की भूमिका में सामने आता है । हंसते फूल मानव को हंसाते हैं, गतिमान सरिता मानव को गतिशीलता की प्रेरणा देती है ।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्राकृतिक सौन्दर्य के विषय में लिखा है –

''यदि अपने भावों को समेटकर मनुष्य अपने हृदय को शेष सृष्टि से किनारे कर ले या स्वार्थ की पशुवृत्ति में ही लिप्त रहे तो उसकी मनुष्यता कहाँ रहेगी ? यदि वह लहलहाते खेतों और जंगलो, हरी घास के बीच घूम–घूम कर बहते हुए नालो, काली चट्टानों पर चांदी की तरह ढलते हुए झरकों, मंजरियों से लदी हुई अमराइयों और तट पर खड़ी झाडियों को देख क्षण भर न लीन हुआ, यदि खिले हुए फूलों को देख वह न खिला, यदि सुंदर रूप सामने पाकर अपनी भीतरी कुरूपता का उसने विसर्जन न किया तो उसके जीवन में रह क्या गया?''[2]

प्रो० हरिशंकर आदेश के काव्य में भारतीय प्रकृति का ही नहीं, कनाडा, अमेरिका एवं ट्रिनीडाड आदि देशों की प्रकृति के सौन्दर्य का विविध चित्र उकेरा गया है ।

[2] रामचंद्र शुक्ल चितांमणि, प्रथम भाग, पृ० 217

NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX- A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No:2581 - 4230
VOLUME 6, ISSUE 5, May -2020

प्रकृति के अनन्य उपासक प्रो० आदेश को प्रकृति के आंगन में अनुपम शांति मिलती है । यह शांति उन्हें सौन्दर्य सृष्टि प्रदान करती है और यह सौन्दर्य उनके काव्य में जीवत रूप में उतारता रहा है । प्रकृति का विविध रूप कवि के भाव विविधता के आधार स्वरूप दृष्टिगोचर होता है ।

प्रो० आदेश के काव्य में चित्रित प्रकृति सौन्दर्य मुख्य रूप से भारतीय–विदेशी एवं जड़–चेतना दो आयामों में विभक्त किया जा सकता है ।

भारतीय प्रकृति

राष्ट्रीयता की नवधार–गतिशीलता के परिणाम स्वरूप इनके काव्य में भारतीय प्रकृति सौन्दर्य का विस्तृत चित्रण किया गया है ।

'कंठ सुशोभित यमुना–गंगा,
सजा शीश पर केतु तिरंगा ।
गाती हे यश गाथा तेरी,
हिम की चोटी किंचिन चिंगा ।''[3]

वन प्रांत में विभिन्न वन्य प्राणियों, लता युग्मों और पेड़–पौधो के सौन्दर्य में शकुंतला सदा हसती–मुस्कराती हुई जीवन को गतिशील बनाए है । कोयल के साथ गीत गाकर संपूर्ण विपिन जागृत कर देती है । प्रकृति के सौन्दर्य को यह प्रक्रिया अत्यधिक जीवंतता प्रदान करती है :–

''पशु–पक्षी सौन्दर्य नृत्य मयूरों के संग करती,
कोकिल के संग गाती ।
मृग छौनों को सदा स्नेह से,
हंस–हंस ह्रदय लगाती है ।''[4]

अध्यात्म सौन्दर्य उभारकर आदेश ने प्रकृति सौन्दर्य को अलौकिक रूप प्रदान करते हैं ।

संदर्भिका

[3] प्रो० हरिशंकर आदेश, प्रवासी की पाती : भारत माता के नाम, पृ० 95
[4] प्रो० हरिशंकर आदेश, शकुंतला, पृ० 90

प्रो० हरिशंकर 'आदेश' – निर्मल सप्तशती – निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2001
प्रो० हरिशंकर 'आदेश' – आदेश सप्तशती – निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2001
प्रो० हरिशंकर 'आदेश' – जीवन सप्तशती – विशाल प्रकाशन, दिल्ली, 2002
महाकवि हरिशंकर 'आदेश' – जमुना सप्तशती – लक्ष्मी प्रकाशन, दिल्ली, 2003
प्रो० हरिशंकर 'आदेश' – विवेक सप्तशती – चंद्रा प्रकाशन, मुदादाबाद, 2004
प्रवासी महाकवि 'आदेश' – पत्नी सप्तशती – चंद्रा प्रकाशन, मुदादाबाद, 2004
गजानन मुक्तिबोध (डॉ० राजपाल शर्मा) – चांद का मुंह टेढ़ा है – एक विवेचन – अमीता प्रकाशन, चरर्वे बालान दिल्ली, 1984
गुलाब राय – काव्य और कला तथा अन्य निबंध
जयशंकर प्रसाद – कामायनी – भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सं० 2010
गोस्वामी तुलसीदास – रामचरित मानस (बड़ा) – गीता प्रेस, गोरखपुर, सं० 2035
डॉ० देवराज – भारतीय संस्कृति (महाकाव्यों के आलोक में) – प्रकाशक, शशिकांत, सं० 1966
श्रीमती देव कथूरिया – हिन्दी कहानी साहित्य में प्रेम और सौंदर्य तत्व निरूपण – आशा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, 1974